भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 02 | उदयपुर मंगलवार 01 फरवरी 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राज्यपाल ने लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को सलाहकार नियुक्त किया

उदयपुर (वि.)। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को अपने सलाहकार मंडल में सदस्य मनोनीत किया है। राज्यपाल मिश्र के प्रमुख सचिव सुबीरकुमार के जारी आदेशानुसार राजस्थान के समग्र विकास से संबंधित प्रकरणों में समय-समय पर परामर्श के लिए गठित राज्यपाल सलाहकार मंडल में लक्ष्यराजसिंह को पर्यटन एवं रोजगार से संबंधित विषयों पर अपनी सलाह देने के लिए मनोनीत किया गया है। राज्यपाल सलाहकार मंडल में नौ अन्य विषय विशेषज्ञों को भी मनोनीत किया हुआ है। राज्यपाल मिश्र के सलाहकार मंडल में उच्च शिक्षा, पर्यटन एवं कला संस्कृति, रोजगार सृजन, विधि, प्रशासन, उद्योग, अर्थशास्त्र, अनुसूचित जनजाति क्षेत्र विकास, जल संरक्षण जैसे तमाम मसलों पर समय-समय पर मंथन किया जाता है।

मिश्रा अंतर्राष्ट्रीय जिंक एसो. के पहले भारतीय कार्यकारी अध्यक्ष बने

उदयपुर (वि.)। हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा को अंतर्राष्ट्रीय जिंक एसोसिएशन का कार्यकारी अध्यक्ष चुना किया गया है। मिश्रा इस पदभार को संभालने वाले पहले भारतीय एवं एशियाई हैं। इस नियुक्ति पर मिश्रा ने कहा कि एसोसिएशन के पास पेशेवरों की एक अद्भुत टीम है। जस्ता की वैश्विक मांग को बढ़ाने, मानव स्वास्थ्य, फसल पोषण, सतत् विकास और आधुनिक जीवन के लिए इसकी अनिवार्यता को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करने को तत्पर हैं। एसोसिएशन में भारत के निदेशक डॉ. राहुल शर्मा ने कहा कि उद्योग जगत में अग्रणी एवं गहरी समझ होने से हमें मिश्रा के अनुभवों का लाभ मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि हिन्दुस्तान जिंक देश की सबसे बड़ी एवं विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जस्ता-सीसा उत्पादक कंपनी होने के साथ पांच दशक से माइनिंग एवं स्मेल्टिंग में नेतृत्व करने वाली कंपनी है। एसोएिशन के सदस्य वैश्विक जस्ता उत्पाद का 60 प्रतिशत और पश्चिमी गोलार्द्ध में 80 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। एसोसिएशन का मुख्यालय डरहम उत्तरी कैरोलिना यूएसए में है।

भारतीय चिकित्सकीय पद्धतियां कोविड-19 में भी कारगर

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के बायोकेमिस्ट्री विभाग में अध्यनरत संगप्रिया मुखर्जी ने कोरोना महामारी की दूसरी लहर के दौरान परंपरागत भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के प्रयोग एवं इनका कोरोनावायरस के लक्षण, गंभीरता, अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता, भर्ती रहने का समय, हानिकारक परिणामों व दुष्प्रभावों की 700 से अधिक आर.टी.पी.सी.आर पॉजिटिव रोगियों पर अध्ययन किया है। बायोकेमिस्ट्री विभागाध्यक्ष डॉ. आशीष शर्मा ने बताया कि आयुर्वेदिक काढ़ा (एलोवेरा, तुलसी, हल्दी, गिलोय) का सेवन करने वाले 85 प्रतिशत कोविड-19 से ग्रसित रोगी 10 दिन या उससे कम समय अस्पताल में भर्ती रहे। इस दौरान उन्हें किसी गंभीर लक्षण व मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ा जबकि परंपरागत औषधि का सेवन ना करने वाले 54 प्रतिशत लोग 20 या ज्यादा दिन अस्पताल में भर्ती रहे। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीय चिकित्सा पद्धतियां अत्यंत उपयोगी हैं और इनके प्रचार-प्रसार, जानकारी, फायदों का विश्वस्तर पर प्रचार होना आवश्यक है।

लखनऊ की डॉ. विद्याविन्दुसिंह को पद्मश्री

लखनऊ (ह.सं.)। डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने अवधि के लोकसाहित्य पर पीएच.डी. की। इसके अलावा साहित्य की हर विधाओं में उन्होंने शताधिक ग्रंथों का प्रणयन किया है। इस वर्ष ही उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री देने की घोषणा की गई। करीब पचास वर्ष पूर्व डॉ. महेन्द्र भानावत ने उन्हें भारतीय लोककला मंडल से जोड़ा और यहां की हर विधा से परिचित रखकर रंगायन जैसी पत्र-पत्रिकाओं में उनका रचना सहयोग लिया।

स्वभाव से वे मृदुभाषी, आत्मीय तथा अत्यंत ही स्नेहिल व्यवहार लिये हैं। उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान में रहते उनका अनेक दिग्गज साहित्यकारों से सहज परिचय हो गया।

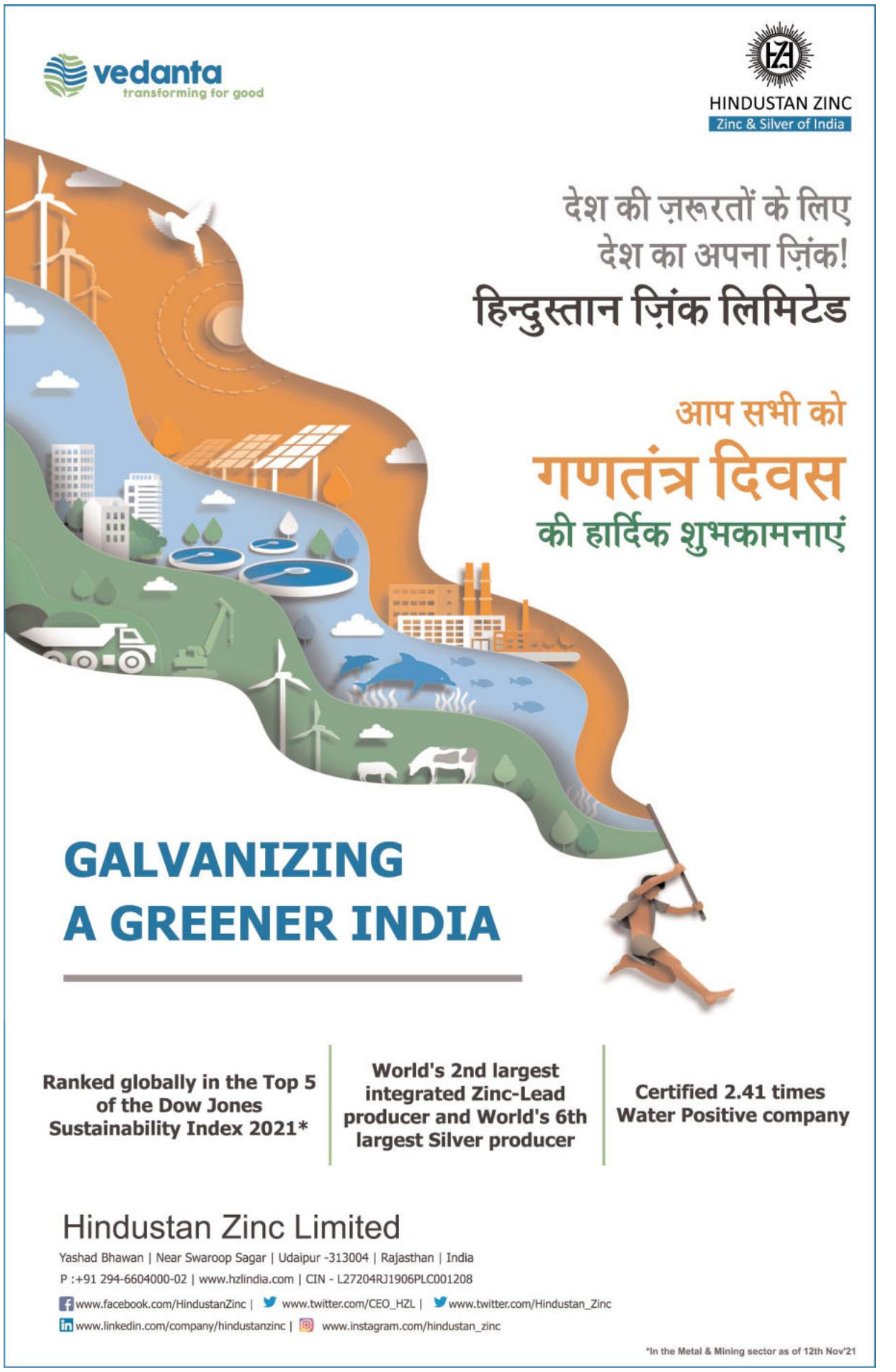

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed-To-Be University)
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय)

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Raj.) Ph. & Fax : 0294-2492440, Email: admissions@jrnrvu.edu.in

समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त

ADMISSIONS OPEN - 2021-22

School of Agricultural Sciences, Dabok - 9460728763

B.Sc. Agriculture (Hons.), B.Sc. Horticulture (Agriculture), B.Tech. Food Technology (30 Seats), M.Sc. (Ag.) Agronomy, M.Sc. (Ag.) Horticulture, M.Sc. (Ag.) Extension Education

Faculty of Computer Science and Information Technology
Ph. 2494227, 2494217, 9414737125

B.C.A., M.C.A., M.Sc.(CS), B.Sc. in Data Science, M.Tech CS, P.G.D.C.A., B.Voc in Software Development, DCA (Diploma in Computer Applications), Ph.D.

Faculty of Management Studies (FMS)
Ph. : 0294-2490632, 9461260408, 9782049628, 9001556306

B.B.A, M.B.A (H.R / Marketing / Finance / Production & Operation Management / I.B / I.T / Tourism and Travel / Retail Management / Agri-Business / Family Business Management), M.H.R.M, Ph.D.

Udaipur School of Social Work - Ph. 0294-2491809, 8118806319, 9829445889

Master of Social Work (MSW). PG Diploma in HRM, PG Diploma in CSR, Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD), Master of Social Work (MSW - Self Finance Evening Batch), P.G. Diploma in Talent Management, Ph.D.

Manikyalal Verma Shramjeevi College

Faculty of Social Sciences and Humanities : Ph. : 0294-2413029, 9829160606, 9413752492

B.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology. Geography. Economics. Political Science, Public Administration, Environmental Science, Jyotish, Music.
M.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics. Political Science, Music. **Diploma Courses** : Diploma in Music (Surmalhar), Diploma in Panchgavya, P.G. Diploma in G.I.S. and Remote Sensing, Bachelor of Journalism and Mass Communication. **Certificate Courses** : Spoken English, Proficiency in English and Communication Skills, Culture of Rajasthan, Research Methods and Data Analyst, Human Rights, Ph.D.

Faculty of Commerce : Ph. : 0294-2413029, 9460275655, 9460372183

B.Com., B.B.A., M.Com, (Accounting, Business Administration), Master of NGO Management, PG Diploma in Training and Development Certificate Courses: Plastic Processing and Manufacturing Skills, Tally ERP 9.0, Goods and Service Tax (GST), Ph.D.

Faculty of Science - Ph. 9828072488, 9785471550

B.Sc. (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology, Biotechnology)
M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
M.Sc. : Mathematics, Physics, Botany, Zoology, Environmental Science. Statistics, Bioinformatics, Biotechnology.
M.Tech. Biotechnology. Ph.D.

SHIVA © 9828244344

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website : www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

स्मृतियों के शिखर (136) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दूब से देवदार की सफर में रहे डॉ. योगेश 'अटल'

डॉ. योगेश 'अटल' हमारे बीच एक ऐसा व्यक्तित्व लेकर उभरे जिन्होंने उदयपुर में 1937 में जन्म लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संगठन के एशिया स्थित समाज विज्ञान सलाहकार के पद पर अपनी गरिमामय सेवाएं देकर पूरे विश्व में भारतीय गौरव, गुमान तथा ग्राम्यांचल की साख को सवा लाखेणी बनाने में अतल-पतल एक कर दिया।

एक कवि के रूप में हम दोनों आपस में परिचित थे। हमारे बीच पत्राचार का सिलसिला भी रहा। कविसम्मेलन में भी एकाध जगह हम मिले पर जब मैं उदयपुर आ गया तब उनके सिंधीबाजार स्थित फूटा दरवाजा के पास के मकान की दूसरी मंजिल पर मिलते रहे। ठीक से याद है 13 जुलाई 1976 को उनसे एक लम्बी बातचीत हुई तब वे इण्डोनेशिया से आये हुए थे। कहने लगे, इण्डोनेशिया तेरह हजार द्वीपों में बंटा हुआ मुल्क होते हुए भी एक भाषा में बंधा हुआ है और हम यहां एक होकर भी भाषा के नाम पर कटे हुए हैं।

अपने सोच में डॉ. अटल सबसे अलग अपने विचार रखने वाले प्रबुद्धचेता थे। बोले, जहां हमने जन्म लिया, यदि वहीं रहे तो जन्म के साथ ही हमारी महत्वाकांक्षा का मरण हो जाता है। मन में सदैव यही रहा कि दो-तीन वर्ष रहकर फिर वहां से अन्यत्र चल बसो।

एक जगह रह हम कोई ताजमहल खड़ा करना नहीं चाहेंगे तो ऐसा प्रयास करना पड़ेगा ताकि स्थान की परिधियों को तोड़ सकें। पहले एक अध्यापक की प्रतिष्ठा छात्रों के माध्यम से होती थी, अब नये परिवेश में इतने विश्वविद्यालय खुल रहे हैं जहां बाहर का व्यक्ति तभी जम सकेगा जब वह छात्रों के लिए, उनके उत्कर्ष और विकास के लिए कुछ करेगा। इस दृष्टि से मुझे रिश्तेदारों से केवल आशीर्वाद मिला, सिफारिशें नहीं।

डॉ. योगेश 'अटल' के साथ सबसे सुखद पक्ष यह रहा कि वे जैसी चाह रखते थे वैसी उनकी मुराद पूरी होती रही। ऐसा करते वे विभिन्न विश्वविद्यालयों का पाला ही नहीं बदलते रहे, अपना विषय और विशेषज्ञता भी बदलते रहे। सन् 1957 में वे बी.ए. कर सागर चले गये। वहां नृतत्वशास्त्र में एम. ए. किया और एक प्रायोजना के तहत गांवों में काम करना शुरू कर दिया। कुछ समय पश्चात वहीं विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू कर दिया।

इस बीच उदयपुर में जन्नुभाई उर्फ जनार्दनराय नागर ने उत्साहित हो उन्हें अपने यहां संचालित उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क में बुलाने को लिखा। वे आये भी परन्तु निराशा ही हाथ लगी। सोचने लगे कि मुझे यहां क्यों किसलिए बुलाया गया? उनके जीवन की यह सबसे बड़ी मजाक ही रही। तभी उन्हें तार मिला कि पंजाब विश्विद्यालय में उनका आज ही इन्टरव्यू है। एक सूचना चण्डीगढ़ में इन्टरव्यू की मिली। वहां पहुंचे। एक इन्क्रीमेंट देकर उनको जोब मिल गया। डेढ़ वर्ष बाद आगरा विश्वविद्यालय में गवर्नर स्पेशन परमिशन से आठ इन्क्रीमेंट पाकर वहां के इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज में नौकरी कर ली। इस प्रकार वे नृतत्वशास्त्री से समाजशास्त्री हो गये।

ज्योतिषी कहते कि उनके पांव में एक भंवरा है जो उन्हें एक जगह टिकने नहीं देता और भाग्य में बिदा है कि वह उन्हें उड़ान-दर-उड़ान दिये रहता है। सन् 1964 के अगस्त माह में वे अमेरिका के कोलम्बो विश्वविद्यालय में रिसर्च एडवाइजर बन गये। फिर आगरा विश्वविद्यालय में आ गये। सागर से पीएच. डी. तो हो ही गये थे। बीच में प्लानिंग कमीशन के प्रोजेक्ट पर काम किया और फिर राजस्थान की कृपा रही कि यहां समाजशास्त्र वालों ने तो नहीं पर राजनीति शास्त्र वालों ने उन्हें बुलाया।

यहां से डॉ. अटल दिल्ली आई.ए.टी. चले गये तब ही आई.सी.एस.सी. में डाइरेक्टर के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। वहां रहते उन्हें लन्दन विश्वविद्यालय में गांधी स्मारक व्याख्यानमाला में आमंत्रित किया। एक माह वे ऑक्सफोर्ड विश्ववद्यालय में रहे। जर्मनी के विश्वविद्यालय में भी उनका व्याख्यान हुआ।

अपने जन्म गांव कानोड़ में हमने भी 6 जून 1956 को जब विपिन जारोली के संयोजन में कुमार साहित्य परिषद की स्थापना की तब एक कविसम्मेलन में उन्हें बुलाया था। उदयपुर में तब अटलजी जागृत साहित्य परिषद चलाते थे जिसके वे मंत्री थे। कानोड़ में तब और भी कवि बाहर से आमंत्रित किये गये थे। यहीं उनसे मेरा परिचय बना जो घनिष्ट होता रहा। जब मैं छोटीसादड़ी गुरुकुल में 9वीं-10वीं में पढ़ा था तब हमारे बीच पत्रों का अच्छा आदान-प्रदान शुरू हो गया था। एक पोस्टकार्ड में उन्होंने मुझे बुड्डिंग पोएट ऑफ गुरुकुल लिखा था। बीकानेर से बीए पास कर जब मैं 1958 में उदयपुर आया तब नंद बाबू के साथ फूटा दरवाजा से लगे उनके निवास की ऊपरी मंजिल में मिलता रहा।

इस प्रकार डॉ. अटल अपने जीवन में सदैव प्रभावी-ही-प्रभावी रहकर जहां-जहां भी रहे, अपनी प्रभावी भूमिका का अमिट प्रभाव देते रहे। हिन्दी में उनकी पहली पुस्तक 'आदिवासी भारत' नाम से निकली। कविता करना उनका निरन्तर चालू रहा। 'खामोशी के बाद' एक संग्रह भी उन्होंने तैयार किया।

प्रख्यात समाजविज्ञानी डॉ. श्यामाचरण दुबे के सम्पर्क में भी वे रहे और उनकी 'एक भारतीय ग्राम' नाम से पुस्तक का अनुवाद भी किया।

उन्होंने बताया कि दुबे एक जिद्दी किस्म के आदमी थे जो हर शब्द जो भारत सरकार द्वारा निश्चित किया गया है उसी का उपयोग करते थे जो डॉ. अटल को स्वीकार्य नहीं था। उन्होंने बताया कि शिमला में यूनेस्को तथा भारत सरकार ने एक सम्मेलन बुलाया जिसमें उनको ए. ए. एस. एस. आर. ई. सी. का सेक्रेट्री जनरल नियुक्त किया। तब उनकी 'सोशल साइंस इन एशिया' प्रकाशित हुई। इस पोस्ट के लिए विश्व भर से 123 व्यक्तियों ने एप्लाई किया किन्तु उन्होंने इसके लिए कोई प्रार्थनापत्र नहीं दिया।

इसी बीच उन्होंने अफसोस जताते अपनी पीड़ा व्यक्त करते कहा कि मेरे जीवन में उदयपुर के अलावा ऐसा कोई अन्य स्थल नहीं है जहां वे अपने साथ मजाक का शिकार हुए। सितम्बर 1974 में दिल्ली में एक बड़ी कांफ्रेंस कर वे पेरिस चले गये।

डॉ. अटल के सम्बन्ध में लोग प्राय: जिक्र करते हैं कि वे आये दिन पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि के माध्यम से बड़बोले बने रहते हैं किन्तु जनसंचार के माध्यमों से समाज विज्ञान के अपने चिन्तन को जन-जन तक पहुंचाना अति आवश्यक है। हर विद्वान को अपना दायित्व समझते हुए यह कार्य बखूबी करते रहना चाहिये। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो कुछ वे लिखते हैं, वह समाजविज्ञान हो, आवश्यक नहीं है पर उसका दृष्टिकोण एक समाजविज्ञानी का ही होना चाहिए।

सच तो यह है कि हमारे देश में समाजविज्ञान बहुत फैला। इसका कूड़ाकचरा भी बहुत भर कर आया। इस समय समाजविज्ञान की जो चुनौतियां हैं, यूनेस्को ने उनका मुकाबला करने का बीड़ा उठाया है। हम एशिया के देश भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से तो एक-दूसरे के निकट हैं पर शैक्षणिक दृष्टि से दूरियां बढ़ी हुई हैं। हमारी पाठ्यपुस्तकों में अमेरिका के अधिक उदाहरण मिल जायेंगे।

डॉ. अटल की दृष्टि में समाजविज्ञान की प्रतिष्ठा के लिए उचित होगा कि हम उनके परिवेश और उसकी शब्दावली में ही अपने विचार व्यक्त करें। अधिकांश शोध-निष्कर्ष विदेशियों द्वारा दिये गये हैं। आवश्यकता इस बात की है कि किसी एक देश के लोगों द्वारा किये गये वर्णन-विश्लेषण की बजाय नये ढंग से अपने निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो। प्रादेशिक मनोवृत्ति को त्याग कर हम ओपन माइंड होकर अपने दायित्व का निर्वाह करेंगे तो ही हम न्याय करेंगे अन्यथा बहुत कुछ छूट जायेगा।

डॉ. अटल इसे अपना सौभाग्य मानते कहते हैं कि एशिया के लिए उन्होंने मुझ एशियावासी को चुना जबकि मेरे से पूर्व मेरा कोई पूर्वज नहीं था। मैं ही पहला हूं। ऐसे में यदि मैं कुछ अच्छा कर पाया तो मेरा यह सौभाग्य मुझे भी प्रसन्नता देगा।

सन् 1974 में वे यूनेस्को में शामिल हुए जहां से 1997 में प्रमुख निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इस बीच एकबार वे भारतीय लोककला मंडल आये थे तब देवीलाल सामरजी और मैंने उन्हें कला-संग्रहालय के साथ-साथ हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी से अवगत कराया। उन्होंने तब यह कहा था कि जो कार्य यहां हो रहा है वह बड़ा महत्वपूर्ण, मौलिक और मूल्यवान है। जीवन के आखिरी पड़ाव में वे भी कुछ ऐसा ही कार्य करना चाहेंगे जिसमें उनकी पूर्ण दिलचस्पी है।

लेकिन जो व्यक्ति अपने अंचल से उठ खड़ा होता है उसके लिए बाहरी आवरण ही बड़ा आकर्षक और लुभावना होता है और वहीं वह बड़ा भी बना रहता है। यह भी सत्य है कि कुछ अच्छे और बड़े कार्य के लिए व्यक्ति को अपना घर छोड़ना पड़ता है अन्यथा उतना बड़ा काम उससे नहीं हो पाता है।

डॉ. योगेश 'अटल' और मेरा जन्म एक ही वर्ष होने से हम दोनों हमउम्र ही थे। अप्रेल 2018 के किसी दिन दिल्ली में उनका निधन हो गया। इसकी सूचना मुझे डॉ. रेखा व्यास ने दी जो उदयपुर की ही रहने वाली है और यहां के आकाशवाणी केन्द्र में अपनी सेवाएं देने के बाद दिल्ली दूरदर्शन में धीरे-धीरे अपना बड़ा पद, बड़ा नाम पाकर साहित्य क्षेत्र में भी अपनी पैठ बनाये है। सुनता रहा कि डॉ. अटल ने उदयपुर में भी अपना एक अच्छा निवास बनाया पर वे बड़ी राजधानी में ही अपने को फिट समझते रहे। सच ही है हवाई जहाज में सफर करने वाले जानते हैं कि ज्यों-ज्यों वह ऊपर उड़ान भरता है त्यों-त्यों नीचे के आदमी छोटे-नन्हे नजर आने लगते हैं।

डॉ. योगेश 'अटल' हमारे बीच एक ऐसा व्यक्तित्व लेकर उभरे जिन्होंने उदयपुर में 1937 में जन्म लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संगठन के एशिया स्थित समाज विज्ञान सलाहकार के पद पर अपनी गरिमामय सेवाएं देकर पूरे विश्व में भारतीय गौरव, गुमान तथा ग्राम्यांचल की साख को सवा लाखेणी बनाने में अतल-पतल एक कर दिया।
उनका सबसे सुखद पक्ष यह रहा कि वे जैसी चाह रखते थे वैसी उनकी मुराद पूरी होती रही। ऐसा करते वे विभिन्न विश्वविद्यालयों का पाला ही नहीं बदलते रहे, अपना विषय और विशेषज्ञता भी बदलते रहे। उनकी हिन्दी में पहली पुस्तक 'आदिवासी भारत' नाम से निकली। 'खामोशी के बाद' एक संग्रह भी उन्होंने तैयार किया।
सन् 1974 में वे यूनेस्को में शामिल हुए जहां से 1997 में प्रमुख निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इस बीच एकबार वे भारतीय लोककला मंडल आये थे तब देवीलाल सामरजी और मैंने उन्हें कला-संग्रहालय के साथ-साथ हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी से अवगत कराया। उन्होंने तब यह कहा था कि जो कार्य यहां हो रहा है वह बड़ा महत्वपूर्ण, मौलिक और मूल्यवान है। जीवन के आखिरी पड़ाव में वे भी कुछ ऐसा ही कार्य करना चाहेंगे जिसमें उनकी पूर्ण दिलचस्पी है।

परिवार - एक वटवृक्ष

- हेमेन्द्र सेठ -

कुछ ही दूरी पर मेरा एक लक्ष्य था,
पर उसके और मेरे बीच में एक वटवृक्ष था,
मैंने वटवृक्ष से बोला,
लक्ष्य को पाने के लिए तुम्हे लांगना होगा,
आज नहीं तो कल तुमसे अलग हो जाना होगा।।
गंभीर आवाज में वटवृक्ष मुझसे बोला,
एक मिनिट तुम मेरी भी सुन लो।
देखो उन पत्तों को जो मुझसे अलग हुए,
कुछ सड़ कर जमीं में दफ़न हुए,
कुछ सूख कर इधर उधर हुए,
हवा के हलके झोकें से भी वो
उड़ने को मजबूर हुए।
दूर भले हो जाना पर कभी
अलग ना होना तुम,
जड़ो से अपना नाता
कभी ऐसे ना तोड़ना तुम।
एक मिनिट की इस बात में,
मूल छिपा है जीवन का।
अलग जो हो जाओगे,
तो फिर कभी ना जुड़ पाओगे,
जीवन की राह के थपेड़ो से तुम
अकेले कैसे बच पाओगे,
जुड़ कर जो रह जाओगे
हरे पत्तों से सदा मुस्कुराओगे,
फूलों की तरह तुम इठलाओगे।।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 फरवरी 2022

सम्पादकीय

सुखमय गणतंत्र जिंदाबाद

सैंकड़ों वर्षों की उम्र लिये हमारा गणतंत्र अभी सौ वर्ष भी नहीं कर पाया है। सतयुग में हमारे देश के वासीन्दों की उम्र ही औसत हजार वर्ष की थी तब सौ वर्ष का तो पालने में ही झूलता था। आदिवासियों में प्रचलित गवरी गाथा में ऐसा उल्लेख भारतगाथा में सुनने को मिलता है। इस दृष्टि से हमारा गणतंत्र तो अभी ललुआ ही है।

अनेक कवियों ने अनेक प्रकार से हमारे देश की अभ्यर्थना की है। 'हे गणतंत्र उषा-सा सुखमय' से लेकर 'भारत है वह जलज कि जिस पर जल का दाग नहीं लगता है' कहकर नाना उपमाओं से इसे मण्डित किया है।

राष्ट्रकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने भारतमाता को ग्रामवासिनी बताते 'तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता' लिख उसके वसुधैव कुटुम्बकम् को सहारा। उन्होंने लिखा-

कमल खिले तेरे पानी में
धरती पर है आम खिले
उस धानी आंचल में आहा!
कितने देश-विदेश पले
सुख बढ़ जाता, दु:ख घट जाता,
जब वह है बंट जाता।
जय-जय भारतमाता।।

आइये, इस अवसर पर हम भी अपने भारत को 'बस भारत के सम भारत है' बनाने में जुड़ जांय।

गणतंत्र दिवस की सभी विज्ञापनदाताओं, लेखकों, पाठकों तथा सुधिजनों को हार्दिक बधाई।

इंटर कॉलेज रेडियोलॉजी क्विज आयोजित

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज, उमरड़ा में इंटर कॉलेज रेडियोलॉजी क्विज का आयोजन किया गया जिसमें उदयपुर के छह मेडिकल कॉलेज की इंटर्न्स डॉक्टर्स की टीमों और 9 रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने भाग लिया। मुख्य अतिथि उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी के प्रेसिडेंट डॉ. आनंद गुप्ता और सेक्रेटरी डॉ. कुशल गहलोत थे।

यूजी सेक्शन में गीतांजली हॉस्पिटल की टीम विजेता रही और क्रमश: पेसिफिक हॉस्पिटल बेदला और पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरडा की टीमें द्वितीय एवं तृतीय रहीं। पीजी सेक्शन में रवींद्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज की आसमीन फैजल विजेता रही। श्रुति गुप्ता द्वितीय तथा पेसिफिक हॉस्पिटल बेदला की मोनिका सत्यम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजाराम शर्मा और उनकी रेडियोलॉजी डिपार्टमेंट की टीम ने किया।

इस अवसर पर पेसिफिक हॉस्पिटल उमरड़ा के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने कार्यक्रम की सराहना की। पीआईएमएस हॉस्पिटल के डीन डॉ. मधु सिंघल ने पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उमरडा का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. सुनील कास्ट, डॉ. सौरभ गोयल तथा डॉ. तपेंद्र तिवारी ने सभी टीमों के अंकों का मूल्यांकन किया। उल्लेखनीय है कि यह राजस्थान में इस तरह का दूसरा कार्यक्रम था। पहला भी पिम्स हॉस्पिटल उमरडा में गतवर्ष संपन्न हुआ था।

सुशीलादेवी भाणावत का निधन

उदयपुर (वि.)। कानोड़ निवासी सुशीलादेवी भाणावत (78) का उदयपुर में 16 जनवरी को निधन हो गया। डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि मामीश्री कुछ समय से उदयपुर में उनके पुत्र नरेन्द्रसिंह एवं डॉ. शूरवीरसिंह के साथ स्वास्थ्य लाभ कर रही थीं। धार्मिक प्रवृत्तियों में लगी रहकर उन्होंने अपने पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा जरूरतमंद महिलाओं तथा छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया।

उनके निधन पर आयोजित नियमित बैठक में जिन विशिष्ट जनों ने भाग लिया उनमें प्रमुख थे- श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ कानोड़ के अध्यक्ष रमेश कुदाल, मंत्री तखतमल लसोड़, कोमल कामरिया, अरुण भाणावत, मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. अमेरिका सिंह, प्रतिपक्ष नेता गुलाबचंद कटारिया, वाणिज्य महाविद्यालय के डीन प्रो. पी. के. सिंह, विभागाध्यक्ष प्रो मंजू बाघमार, प्रो. मुकेश माथुर, प्रो. राजेश्वरी नरेंद्रन, राजस्थान विद्यापीठ के वाइस चांसलर प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, तुलसी अमृत निकेतन के संचालक मनोज भानावत, एडवोकेट फतहलाल नागौरी, प्रो. जी.एस. सोरल।

पत्रकार-लेखक मेघराज श्रीमाली नहीं रहे

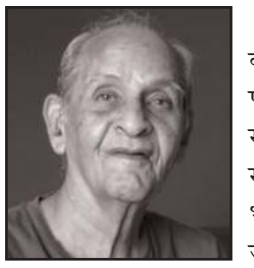

जयपुर (वि.)। पत्रकार, कवि, लेखक और राजस्थान के पाँच मुख्यमंत्रियों के प्रेस अटैची रहे मेघराज श्रीमाली (91) नहीं रहे। जयपुर से डॉ. संजीव भानावत ने सूचना दी कि 19 जनवरी को उनका निधन हो गया। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत एक स्वतंत्र पत्रकार के रूप में साप्ताहिक पत्र 'ज्वाला' से की थी। जब कर्पूरचंद कुलिश ने राजस्थान पत्रिका की शुरुआत की तब श्रीमाली उनकी संपादकीय टीम में थे। उन्होंने 'मंझधार में मिडलची' कॉलम शुरू किया। सन् 1958 में राजकीय सेवा में जनसंपर्क विभाग में नियुक्त किये गए। श्रीमालीजी की सर्वाधिक पहचान टेलीविजन के लोकप्रिय धरावाहिक 'बालिका वधू' के दो हज़ार से अधिक एपीसोड के स्लोगन लिखने से बनी। वे अपने पीछे प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना सुश्री प्रेरणा श्रीमाली, कॉरपोरेट प्रबंधक मनोज श्रीमाली और 'बालिका वधू' के लेखक के रूप में ख्याति अर्जित करने वाले लेखक पूर्णेन्दु शेखर का नामचीन परिवार छोड़ कर गए हैं।

प्रो. जगमलसिंह का देहावसान

जयपुर (वि.)। जयपुर से श्रीकृष्ण शर्मा ने सूचित किया कि ब्यावर में प्रो. जगमलसिंह का 20 जनवरी को निधन हो गया। उन्होंने गैर हिन्दी राज्य मणिपुर के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन करते अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। विगत कुछ समय से बीमार रहते भी वे साहित्य साधना में निमग्न रह राजस्थान के लेखकों का परिचय कोश तैयार कर रहे थे। उनके निधन पर डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, क़मर मेवाड़ी, डॉ. महेन्द्र भानावत ने श्रद्धांजलि व्यक्त की।

भेरूलाल भानावत चल बसे

उदयपुर (वि.)। कानोड़ वाले भेरूलाल भानावत का 22 जनवरी को निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। एक आदर्श शिक्षक के रूप में अपनी लम्बी राजकीय सेवा में रहते अपने उसूलों में खरे और सच्चे रहने के कारण शिक्षा विभाग में उनकी अच्छी पहचान बनी। वे भरापूरा शिक्षित परिवार छोड़ गये हैं।

सभी दिवंगतों को शब्द रंजन की हार्दिक श्रद्धांजलि।

शेयर बाजार में कई शेयरों से निवेशकों को हुआ भारी नुकसान

उदयपुर (वि.)। बीएसई सेंसेक्स पिछले पांच वर्षों में 17 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा है, 110 प्रतिशत से अधिक रिटर्न भी निवेशकों को है लेकिन उसी समय के दौरान, कुछ निवेशक स्टॉक चुनने में विफल रहे और जिससे उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा। अगर देखा जाए तो रिलायंस कैपिटल के शेयर, 2017 में 850 रूपये से अधिक की कीमत पर कारोबार कर रहे थे जो अब वर्तमान में केवल 13 रूपये पर कारोबार कर रहे हैं।

ऐसे ही एसआरईआई इंफ्रा, और सदभाव इंजीनियरिंग शेयरों ने भी निवेशकों को निराश ही किया है। एसआरईआई इंफ्रा आज 10 रुपये से नीचे ट्रेड कर रहे है। सदभाव इंजीनियरिंग एक कंस्ट्रक्शन और इंजीनियरिंग कंपनी है जो नहरों, सिंचाई परियोजनाओं, सड़कों, पुलों, खनन परियोजनाओं, बांधों आदि के क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करती है। जनवरी 2018 में, कंपनी का शेयर 400 रुपए से ऊपर कारोबार कर रहा था। वर्तमान समय में कंपनी के स्टॉक 50 रुपए से कम पर ट्रेड कर रहे हैं। यानि कंपनी की संपत्ति को 85 प्रतिशत से अधिक का घाटा हुआ है। स्टॉक का डाउनट्रेंड इसी का परिणाम है। ईपीसी कंपनी को इस साल जून की तिमाही में 1.5 बिलियन का घाटा हुआ। पिछली दस तिमाहियों में से यह नौंवा घाटा था। फ़िलहाल कंपनी अपनी संपत्तियों के माध्यम से पूंजी जुटाकर अपना काम जारी रखने का प्रयास कर रही है और हर संभव तरीके से धन जुटाकर व्यापार को बेहतर बनाने की कोशिश कर रही है।

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.
शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) 313001

गणतंत्र दिवस पर भण्डार के सभी सदस्यों एवं उपभोक्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई

(अश्विनी कुमार वशिष्ठ)
प्रकाशक

(आशुतोष भट्ट)
महाप्रबन्धक

एडवांस जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट एण्ड ओर्थोपेडिक सेन्टर

जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट (घुटना, कुल्हा, कंधा व कोहनी) | रिविज़न रिप्लेसमेन्ट | यूनिकॉन्डिलार नी-रिप्लेसमेन्ट
स्पाइन र्सजरी | दूरबीन द्वारा घुटने की लिगामेंट सर्जरी | ट्यूमर सर्जरी | जटिल फ्रैक्चर सर्जरी

शीघ्र रिकवरी प्रोटोकॉल, कम दर्द, कम ज़ख्म और छोटा चीरा आपको जल्दी ठीक होने में मदद करता है।

अब घुटना प्रत्योरोपण व कुल्हा प्रत्योरोपण सुविधा — चिरंजीवी मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना (MMCSBY) | राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (RGHS) में भी उपलब्ध

गीतांजली एडवांस ऑर्थोपेडिक सेंटर के अनुभवी एवं सिद्धहस्त डॉक्टर्स की टीम

डॉ. हरप्रीत सिंह
M.S. (Orthopedics), Fellowship (Joint Replacement)
AIIMS, New Delhi & CHUV, Switzerland
Consultant Joint Replacement, Spine & Arthroscopy Surgeon
ओपीडी :– सोमवार, बुधवार, शुक्रवार

डॉ. रामावतार सैनी
M.S. (Orthopedics) Spine, Trauma, ESVP - USA,
Australia, Germany, UK & Switzerland in
Joint Replacements & Revision Replacements
Consultant Orthopedics | Expert in Unicondylar Knee Replacement
ओपीडी :– मंगलवार, गुरूवार, शनिवार

डॉ. कमल कुमार अग्रवाल
MBBS, MS (Orthopaedics)

डॉ. संगम त्यागी
MBBS, DNB (Ortho)

डॉ. अंशु शर्मा
MBBS, M.S. (Ortho)

डॉ. निहार शाह
MBBS, M.S. (Ortho)

- भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ECHS)
- कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC)
- उत्तर पश्चिमी रेलवे (NWR)
- हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL)
- स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (SBI)
- भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL)
- भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI)
- राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMM)
- भारतीय खाद्य निगम (FCI)
- सभी महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) व इन्श्योरेन्स से अधिकृत है।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल

नेशनल हाईवे-8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.)

+91 294 250 0044

बाजार / समाचार

उदयपुर में कैबिनेट मंत्री खाचरियावास ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज

उदयपुर (वि.)। गांधी ग्राउण्ड पर 73वें गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह उत्साह एवं सादगी के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि खाद्य

एवं नागरिक आपूर्ति व उपभोक्ता मामले के मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और परेड का निरीक्षण किया।

खाचरियावास ने कहा कि देश आज विश्व में एक बड़ी ताकत बन कर खड़ा है। इसकी एक वजह यही है कि यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी वर्गों के लोग एक हैं और सभी का एक ही संकल्प है कि हमारी आन-बान और शान का प्रतीक तिरंगा सदा लहराता रहे। तिरंगा हमारा धर्म है, तिरंगे के सम्मान के लिए हम सभी समर्पित हैं। उन्होंने कहा कि मेवाड़ की धरा ने पूरी दुनिया को शौर्य और स्वाभिमान का संदेश दिया है और इसी परंपरा का निर्वहन पूरा हिन्दुस्तान कर रहा है। हिन्दुस्तान न कभी झुका है और न कभी झुकेगा। मेरा देश सदैव आगे बढ़ता रहेगा।

खाचरियावास ने महाराणा प्रताप के शौर्य व बलिदान को अतुल्य बताते कहा कि स्वतंत्रता से पहले महाराणा प्रताप ऐसे एकमात्र स्वाधीनता सेनानी थे जिन्होंने हार नहीं मानी और मेवाड़ की सुरक्षा के तत्पर रहे। प्रताप के साथ भामाशाह, हकीम खां सूरी, भीलू राणा, राणा पूंजा आदि के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। खाचरियावास ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, अशफ़ाकउल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, मौलाना अबुल कलाम, डॉ. भीमराव अंबेडकर आदि के योगदान को सर्वोपरि व अविस्मरणीय बताया।

समारोह में जिले में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाओं एवं कार्यों के लिए 27 व्यक्तियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनके अलावा इंदिरा रसोई के सफल क्रियान्वयन के लिए बांसवाड़ा की हरिओम सेवा संस्थान, निम्बाहेड़ा के श्यामसुंदर सोमानी, कानोड़ की वर्द्धमान महिला सेवा संस्थान, प्रतापनगर की राजस्थान बाल कल्याण समिति, स्काउट में प्रधानमंत्री शील्ड प्राप्त करने के लिए महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य संजय दत्ता को सम्मानित किया तथा शहीद लेफ्टिनेंट अभिनव नागौरी के पिता धर्मचन्द्र नागौरी व माता सुशीला नागौरी का शॉल ओढ़ाकर व श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।

समारोह में अतिरिक्त जिला कलक्टर (शहर) अशोककुमार ने माननीय राज्यपाल के संदेश का पठन किया। समारोह के दौरान भारतीय लोककला मण्डल के निदेशक डॉ. लईक हुसैन के निर्देशन में लोक कलाकारों ने 'इण धरती रो म्हाने अभिमान रे' लोकनृत्य व चरी नृत्य की प्रस्तुति दी। समारोह में नगर निगम महापौर गोविन्दसिंह टांक, उपजिला प्रमुख पुष्कर तेली, समाजसेवी गोपाल शर्मा, लालसिंह झाला, त्रिलोक पूर्बिया, लक्ष्मीनारायण पंड्या, के.जी. मून्दडा, कुबेरसिंह, मनोहरसिंह, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता, जिला कलक्टर ताराचंद मीणा, आबकारी आयुक्त चेतन देवड़ा, जिला पुलिस अधीक्षक मनोजकुमार, जिला परिषद सीईओ मयंक मनीष, गिर्वा एसडीएम सलोनी खेमका सहित पार्षदगण, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र सेन व श्रीमती रागिनी पानेरी ने किया।

इसी कड़ी में संभागीय आयुक्त निवास एवं कार्यालय पर संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, जिला कलक्टर निवास एवं कार्यालय पर जिला कलक्टर ताराचंद मीणा तथा सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि सांसद अर्जुनलाल मीणा, कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, ब्रीगेडियर एस. एस. जेतावत, कुल प्रमुख बी.एल. गुर्जर, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, स्पोर्ट्स बोर्ड सचिव डॉ. भवानीपालसिंह राठौड़ ने झण्डारोहण कर एनसीसी परेड की सलामी ली।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि बीते 72 वर्षों में हमने अनेक क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल की हैं

लेकिन अभी भी ऐसे कई लक्ष्य हैं जो हमसे बहुत दूर हैं। हमें कभी नही भूलना चाहिए कि गणतांत्रिक व्यवस्था में बेहतर गण से ही बेहतर तंत्र का निर्माण होता है। समारोह में विद्यापीठ के विभिन्न विभागों के डीन, डायरेक्टर व कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

विद्या प्रचारिणी सभा, भूपाल नोबल्स संस्थान में मुख्य अतिथि कर्नल नरेन्द्रसिंह शक्तावत, सेमारी ने झण्डारोहण किया और

मार्चपास्ट की सलामी ली। संस्थान के प्रबन्ध निदेशक मोहब्बतसिंह राठौड ने परेड टुकड़ी का निरीक्षण किया। संस्थान के मंत्री डॉ. महेन्द्रसिंह आगरिया ने अतिथियों का स्वागत किया।

समारोह में संस्थान की आर्मी, नेवल एवं एयर विंग की एनसीसी सीनियर व जूनियर डिविजन तथा गर्ल्स विंग की कैडेट्स द्वारा मार्चपास्ट किया गया। मार्चपास्ट का नेतृत्व परेड कमाण्डर सृष्टिराज राणवात ने किया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले मंत्रलायिक कर्मचारीगण एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदीपकुमारसिंह पुरावत ने शॉल, प्रतीक-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। समारोह में शक्तिसिंह राणावत, डॉ. दरियावसिंह चुण्डावत, हनुमंतसिंह बोहेड़ा, करणसिंह चूण्डावत, महेन्द्रपालसिंह शक्तावत, राजेन्द्रसिंह राणावत, भानुप्रतापसिंह सोलंकी, राजदीपसिंह राणावत, मूलसिंह सोलंकी, मोतीसिंह झाला सहित अधिकारीगण, प्रधानगण, अध्यापकगण, गणमान्य अतिथि तथा विद्यार्थी उपस्थित थे।

भारतीय किसान संघ के प्रान्त कार्यालय बलराम भवन, सवीना में गणतंत्र दिवस पर झंडारोहण प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सुहास मनोहर, जिला कोषाध्यक्ष किशन सिंह द्वारा किया गया। समारोह में महानगर अध्यक्ष

दिलोप लोहार, महानगर मंत्री भारत कुमावत, ललित पालीवाल, रमेश शर्मा सहित कई सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर भारत माता पूजन का किया गया। मुख्य वक्ता सुहास मनोहर ने गणतंत्र दिवस के इतिहास तथा भारत माता को भारत माता क्यों कहा जाता है, की जानकारी दी। भारत कुमावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल में प्राचार्य संजय दत्ता ने ध्वजारोहण किया तथा तिरंगे को सलामी दी। उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्थापित भारतीय नेशनल आर्मी के योगदान से अवगत कराते हुए विभिन्न

स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया। समापन वन्दे मातरण गायन से हुआ।

गुजरात पोर्ट ने सीकोस्ट के प्रस्ताव को स्वीकारा

उदयपुर (वि.)। गुजरात पोर्ट एंड लॉजिस्टिक्स कंपनी लि. (जीपीएलसीएल) को गुजरात मैरीटाइम बोर्ड द्वारा एसयूपी जारी किया जा रहा है और जीएसएफसी ने सीकोस्ट शिपिंग सर्विसेज लि. (एसएसएसएल) द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है, जिसमें छोटे बंदरगाहों से बड़े बंदरगाहों तक बोगियों के माध्यम से कंटेनरों और बल्क कार्गो की तटीय गति को विकसित किया जा रहा है। उपरोक्त परियोजना भारत सरकार, जहाजरानी मंत्रालय द्वारा भूमि यातायात को कम करने के लिए सागर माला योजना की ओर पहला कदम होगा जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद होगा और उच्च लागत प्रभावी एग्जिम व्यापार होगा और अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाएगा।

उपरोक्त परियोजना में उच्च राजस्व आय होगी जो वर्तमान व्यवसाय में अतिरिक्त रूप से 200 करोड़ से अधिक का कारोबार बढ़ाएगी और 100 कर्मचारियों को प्रसारित करने की स्थिति में होगी। इसके अलावा एसएसएसएल ने जीपीएलसीएल को दीर्घकालिक सहयोग के लिए संयुक्त उद्यम का प्रस्ताव दिया है जो सरकार की नीति के अनुसार लागू करने की प्रक्रिया के तहत है। बीएसई लिस्टेड (542753) सी कोस्ट, मुंद्रा पोर्ट से कंटेनर्स द्वारा कृषि संबंधी वस्तुओं के निर्यात संचालन जैसे अग्रेषण और देखभाल करने वाली श्रेष्ठ तीन कंपनियों में से एक है। यह कंपनी एक ही छत के नीचे सारे लॉजिस्टिक्स समाधान प्रस्तुत करने के साथ आधुनिक ड्राय वेसल्स के अंतर्राष्ट्रीय जहाज संचालन की सुविधाएं भी प्रदान करता है। यह प्रतिवर्ष लगभग 5.0 मिलियन मेट्रिक टन बल्क (इकाईकृत समुद्री सामना) को समुद्री मार्ग से भेजता है।

'कम्युनिकेशन टुडे : 25 वर्षों का शानदार सफर' वृत्तचित्र ऑनलाइन लोकार्पित

जयपुर (वि.)। प्रेस दिवस के अवसर पर जयपुर से प्रकाशित त्रैमासिक मीडिया जर्नल कम्युनिकेशन टुडे की रजत जयंती पर आधारित वृत्तचित्र 'कम्युनिकेशन टुडे : 25 वर्षों का शानदार सफर' का ऑनलाइन लोकार्पण किया गया। इस वृत्तचित्र का निर्माण क्रिएटिव प्रोडक्शन के विनोद सैन ने किया। आलेख फिल्म पत्रकार श्याम माथुर का था। कार्यक्रम माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर कम्युनिकेशन टुडे के संपादक प्रो. संजीव भानावत ने बताया कि 25 वर्ष पूर्व कोलंबो में आयोजित दक्षिण एशियाई मीडिया शिक्षकों के एक सम्मेलन में भारत में शोध जर्नल्स के अभाव की पूर्ति की दिशा में उन्होंने इसके प्रकाशन का संकल्प लिया था।

इन 25 वर्षों में कम्युनिकेशन टुडे के मीडिया से जुड़े विविध पक्षों पर अनेक विशेषांकों का भी प्रकाशन किया। रजत जयंती वर्ष में भारत में मीडिया शिक्षा के 100 वर्ष पर प्रकाशित विशेषांक की देशभर में विशेष सराहना की गई। प्रो. भानावत ने बताया कि कम्युनिकेशन टुडे के अकादमिक योगदान पर वर्धा के महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और लुधियाना के पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में लघु शोध प्रबंध भी प्रस्तुत किए गए हैं। उन्होंने बताया कि इस शोध पत्रिका के माध्यम से देश के अनेक मीडिया शिक्षकों, मीडियाकर्मियों और शोधार्थियों को विशेष अकादमिक मंच मिला है।

कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश ने मीडिया शोध – अनुसंधान के क्षेत्र में कम्युनिकेशन टुडे के संपादक प्रो. संजीव भानावत के प्रयत्नों का उल्लेख करते हुए कहा कि नई सदी में ऐसे शोध प्रकाशनों की महती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय शीघ्र ही जनसंपर्क एवं विज्ञापन पर केंद्रित शोध जर्नल का प्रकाशन प्रारंभ करने जा रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे मीडिया से जुड़े अकादमिक संगठनों से भी आह्वान किया कि वे मीडिया शोध के क्षेत्र में सामूहिक रूप से जुड़ कर इस दिशा में विशेष कार्य करें।

कार्यक्रम में भारतीय जनसंचार संस्थान ढेंकानल के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. मृणाल चटर्जी, भारतीय जनसंचार संस्थान, जम्मू के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. राकेश गोस्वामी व सहायक प्रोफेसर संजीत खजुरिया, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय रांची के पूर्व डीन प्रो. संतोष तिवारी, असम सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सिलचर के डीन प्रो. जी. पी. पांडे, जयपुर के वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र बोड़ा एवं कल्याण कोठारी, कोलकाता के सुरेंद्र नाथ गर्ल्स कॉलेज के डॉ. उमाशंकर पांडे, भोपाल के मेट्रो मिरर डॉट कॉम के शिवहर्ष सुहालका आदि ने मीडिया शिक्षा और शोध के क्षेत्र में कम्युनिकेशन टुडे के योगदान के बहुआयामी पक्षों की चर्चा करते हुए यह सुझाव भी दिया कि आने वाले समय में यह जर्नल मीडिया के अछूते और उपेक्षित पक्षों पर विद्यार्थियों को विशेष शोध करने के लिए प्रेरित करे। वक्ताओं का मानना था समसामयिक संदर्भ में मीडिया के क्षेत्र में हो रही शोध को अधिक प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए।

प्रारंभ में शहीद मंगल पांडे पीजी गर्ल्स कॉलेज, मेरठ की सहायक प्रोफेसर डॉ. उषा साहनी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। तकनीकी पक्ष आईआईएमटी यूनिवर्सिटी मेरठ की पृथ्वी सेंगर ने संभाला। इस अवसर पर वृत्तचित्र निर्माता विनोद सैन को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सक्का ने शायरियों में उकेरी संविधान की विशेषताएं

उदयपुर (वि.)। उदयपुर के स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का ने आजादी की 75वीं जयंती पर विश्व के सबसे लंबे भारतीय संविधान की विशेषताओं को गजल में लिखकर गुणगान किया है।

सक्का के अनुसार संविधान की गजलमयी विशेषताओं को चर्मपत्र पर 120 पृष्ठों में 615 शायरियों के माध्यम से शब्दों में चित्रित किया गया है। इसके प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक 'संविधान-ए-गजल' को चांदी के अक्षरों में लिखा है।

भारतीय मूल संविधान की तर्ज पर इस संविधान की गजल पुस्तिका का प्रत्येक पृष्ठ 58.4 सेमी ऊंचा व 47.7 सेमी चौड़ा है तथा वजन 13 किलो है। इसे मूल संविधान की तरह ही काली स्याही में लिखा गया है। सक्का ने इसे विश्व का पहला व सबसे लंबा चर्मपत्र पर हस्तलिखित संविधान-ए-गजल होने का दावा किया है। गजल रूप में कुछ शायरियां इस तरह हैं-

इब्तिदा करता हूं मैं, पढ़कर संविधान हमारा।
लिख रहा हूं मैं गजल में, संविधान हमारा।।
हर धर्म व मजहब को, लगाने गले सिखाता।
प्रकृति पर्यावरण की हिफाजत का संविधान हमारा।।
दख़ल अन्दाजी न होगी लेखनी-ए-कलम पर।
आज़ाद रही कलम आज़ादी का संविधान हमारा।।
प्यासा न रहे कोई भूखा न सोए कोई कभी।
सरकार को देता हुक्म संविधान हमारा।।
चरीन्दे हो या परिन्दे रखा सबका ख्याल।
कुछ नहीं रखता कसर ऐसा संविधान हमारा।।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)
गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं
MEMBER J.K. ORGANISATION
JK TYRE & INDUSTRIES LTD.
SELECTED Superbrand INDIA 2009-10 CONSUMER VALIDATED

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

कम दरों पर बेहतर उपचार

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH PRE ACCREDITED

हड्डी एवं जोड़ से सम्बधित समस्त रोगों का सर्म्पूण उपचार

अनुभवी विशेषज्ञों की सेवाएं

डॉ. बी.एल. कुमार
सीनियर प्रोफेसर एवं हेड़
ऑर्थोपेडिक

डॉ. लक्ष्मी नारायण
ऐसोसिएट प्रोफेसर
ऑर्थोपेडिक

डॉ. शशांक रांका
असिस्टेंट प्रोफेसर
ऑर्थोपेडिक

डॉ. सागर बिजारनिया
असिस्टेंट प्रोफेसर
ऑर्थोपेडिक

घुटना, कुल्हा व जोड़ प्रत्यारोपण– एडवांस इम्प्लान्ट्स, छोटे चीरे के द्वारा सर्जरी, एडवांस फिजियोथेरेपी।

फ्रेक्चर व एक्सीडेन्ट–
किसी भी तरह के ऑपन फ्रेक्चर, आपातकालीन सर्जरी सुविधा।

हड्डी से संबंधित फ्रेक्चर नये, पुराने टेडे–मेडे, जुडें हुए, नही जुडे हुए
सभी प्रकार के फ्रेक्चर का उपचार

स्पाइन सर्जरी–
रीढ़ की हड्डी के फ्रेक्चर, रीढ़ की हड्डी का खिसकना, रीढ़ की सभी प्रकार की सर्जरी डिस्क सर्जरी– डिस्क का खिसकना, लम्बर व सर्वाइकल स्पाईन, सायटिका– लम्बर केनाल स्टेनोसिस, रूट ब्लॉक।

लिगामेन्ट इन्जरी– लिगामेन्ट रिपेयर, लिगामेन्ट रिकन्सेंट्रेशन, कन्धा, घुटना, कोहनी टखना आदि की इंजरी।

पोलियो– रिकन्सट्रेक्टिव सर्जरी

जन्मजात विकलांगता–
टेढ़े–मेढ़े पैर (CTEV), बच्चों में कुल्हे के जोड़ का सरकना (DDH),
पैरो की हड्डी का टेढ़ापन, सेरेब्रल पाल्सी की कन्सट्रेक्टिव सर्जरी।

स्पोर्ट इन्जरी– किसी प्रकार का घुटना, टखना, कोहनी, कन्धा, कलाई, कुल्हे की चोट एवं मसल स्ट्रेन।

दूरबीन द्वारा जोड़ों का उपचार (ऑर्थोस्कापी)– लिगामेंन्ट, गद्दी, घुटने व कन्धे की दूरबीन द्वारा सर्जरी

लेमिनर फ्लॉ के साथ विश्वस्तरीय सीमलेस मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर की सुविधा।
अत्याधुनिक सुविधायुक्त सीमलेस मॉड्यूलर आई.सी.यू.।

नि:शुल्क परामर्श व बहुत ही कम दरों पर सर्जरी

सरकारी स्कीम में आमजन हेतु नि:शुल्क / कैशलेस उपचार की सुविधाएं

चिरंजीवी मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

RGHS राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम (RGHS)

ESI राज्य कर्मचारी बीमा के अन्तर्गत उपचार

24/7 EMERGENCY SERVICE आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3510000 | Mob. 8696440666 | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।